साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 4
April 2016

चल रही हैं पवन

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

चल रही हैं पवन
मंद मंद
हो रहा हैं तन मन
तरंगित
आ रहा हैं सावन
मन हो रहा आनंदित
हो रहा हैं चमन
भौरों से गुंजित
हो रहा साफ गगन
और बदल हो रहे
खंडित
लगी हैं लगन
बहुत हैं खुश
पंडित
और विरहन का मन
भरा हुआ हैं पीड़ा से
चिरसंचित
लगी हैं कैसी अगन
रहता हैं हरपल
मन आशंकित
हो रहे हैं जन
क्यों चकित
इस सुहावन मौसम में
कर रहे प्रेमी-गन आलिंगन
बिना हुए विचलित
चल रही हैं पवन
मंद मंद